ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 100-102

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

प्रसार माध्यमों की उपयोगिता

प्रो. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी,

हिंदी विभागाध्यक्ष, सरस्वती संगीत कला महाविद्यालय, लातूर (महाराष्ट्र), भारत

Received- 06.03.2020, Revised- 11.03.2020, Accepted - 17.03.2020 E-mail: santoshkulkarni1979@gmail.com

सारांश : *'प्रसार माध्यम की उपयोगिता पर विचार करने से पुर्व यह देखना आवश्यक होगा कि प्रसार माध्यम का अर्थ क्या है। प्रसार का अर्थ है फैलाना। माध्यम का अर्थ है किसी आशय या जानकारी को फैलानेवाले साधन। इस दृष्टि से प्रसार माध्यम का अर्थ होता है किसी जानकारी को सर्वत्र फैलाने वाले साधन।*

सृष्टि के प्रारंभिक काल से ही मनुष्य की जिज्ञासा रही है अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करें तथा प्राप्त जानकारी को औरों तक पहूचाय। अपनी इसी जिज्ञासा को पुरा करणे हेतू उसने समय–समय पर जानकारी प्रसारित करने के साधनों को खोजने का प्रयास किया है। मनुष्य की इसी निरंतर खोज का परिणाम है आज के प्रचार का माध्यम।

कुंजीभूत शब्द– प्रसार माध्यम, उपयोगिता, सर्वत्र, जिज्ञासा, निरन्तर खोज, प्रसारित, प्रारंभिक, जानकारी, परिणाम।

आधुनिक युग विज्ञान और तंत्रज्ञान का युग माना जाता है। विज्ञान के नित्य नये क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए है, जिसके परिणाम स्वरूप मनुष्य की नजर में संसार छोटा होता जा रहा है। आधुनिक प्रसार माध्यम भी विज्ञान की ही देन है। प्रसार मध्यामों के बारे में ये काहु तो अनुचित नहीं होगा –

जिससे पढे बगैर आए ना करार, वह है अखबार
जिसकी आवाज लुभावणी, उसे कहते है आकाशवाणी
भाषा है सबको जिसका दर्शन, उसे कहते हैं दूरदर्शन
फायदे जिसके अनगिनत, अरे! या तो अपना संगनक

यहॉ केवल हम आवाज है 21 वीं सदी के मानव की प्राचीन काल में अर्थात लोकगीत कीर्तन लोकगीत कीर्तन तीर्थाटन की तीर्थाटन आदि त्वचा की माध्यमिक पूर्णिमा विकास के दौर में प्रचार माध्यम और नए–नए प्रसार माध्यम विकसित होते हैं उनकी खोज के परिणाम स्वरूप वर्तमान युग में जो प्रसार माध्यम इजात हुए हैं उनमें समाचार पत्र, रेडियो, संगणक, इंटरनेट आदि का समावेश होता है।

छपाई तंत्र का अविष्कार हुआ और मानवी जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया। जिससे सूचना प्रसारण का दायरा विस्तृत हुआ। प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्रिका आदि का समावेश होता है। इनमें समाचार पत्र सबसे अधिक प्रभावीत प्रसार माध्यम है। समाचार पत्र का अर्थ है, सद्य स्थिति की जानकारी देनेवाला पत्र। वीडियो, दूरदर्शन और संगणक आदि इलेक्ट्रॉनिक प्रसार माध्यमों के पूर्व समाचार पत्र प्रसार का एकमात्र साधन था। स्वतंत्रता पूर्व काल में बालशास्त्री जांभेकर आदि क्रांतिकारकों ने 'केसरी', 'मराठा' और 'दर्पण' ऐसे समाचार पत्र निकालकर अपने विचार लोगों तक पहुँचाए और उनमें राष्ट्रभक्ति निर्माण करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। इन समाचार पत्रों के माध्यम से उन्होंने समाज प्रबोधन और जन जागृति का कार्य किया। समाचार पत्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके माध्यम से हम अपने विचार दूसरों तक पहुँचा सकते हैं।

शिक्षा का प्रसार जैसे–जैसे बढ़ता जा रहा है वैसे–वैसे आए दिन नए नए समाचार पत्र निकल रहे हैं। इन समाचार पत्रों में बच्चों से लेकर बड़ों तक सबके लिए कुछ न कुछ होता है। विश्वभर की खबरें वर्तमान स्थिति की जानकारी समाचार पत्र से प्राप्त होती है। जैसे फिल्मी खबरें, राजनीतिक हलचल, हत्या और आत्महत्या, बाजारभाव, महिलाओंपर होनेवाले अत्याचार, अकाल, बाढ़, भूकंप, आतंकवादियों के हमलों से घायल और मृत व्यक्तियों की जानकारी नौकरी के विज्ञापन आदि जैसी असंख्य खबरें समाचार पत्रों में छपती है। जिसे हमारे ज्ञान में वृद्धी होणे के साथ हम लाभान्वित हो सकते हैं। आज जानकारी के पिछे क्षेत्र में कोई पिछे में नहीं रहना चाहता। आज घर–घर में समाचार पत्र खरीदे जाते हैं और पढे जाते हैं। भारत विविधता का देश है। यहां अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। इसलिए हर भाषा में समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। घर बैठे लोग समाचार पत्रों के माध्यम से सूचना प्राप्त कर सकते हैं।

समाचार पत्र जनतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। आ जाता है जो लोगों को उनके अधिकार और कर्तव्य की जानकारी देने के साथ ही उनके अधिकारों की रक्षा करता है। और जनता के बीच कड़ी के रूप में काम करता है। जहां एक और सरकार समाचार पत्र पर अंकुश रखने का कार्य करते है। वहीं दूसरी और उनकी अपेक्षा सरकार तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। प्रसार माध्यम

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

का दूसरा महत्वपूर्ण साधन है– रेडियो, जो आधुनिक विज्ञान की डेरी को मिली अनोखी देन है। समाचार पत्र पढ़े लिखे लोग ही पढ़ सकते हैं। परंतु रेडियो श्रव्य माध्यम होने से निरक्षर सभी इससे लाभान्वित हो सकते हैं। रेडियो की खोज इटालियन शास्त्री ने की विद्युत चुंबक तत्व संबंधित तत्व का उपयोग करते हुए सितंबर 1918 में उसने इंग्लैंड से ऑस्ट्रेलिया पहला रेडियो संदेश भिजवाया। इसके पश्चात पूरे विश्व में रेडियो का प्रसारण होने लगा।

भारत मे 50 वर्षों में आकाशवाणी का विकास हुआ है। सन 1936 में 'इंडियन ब्रॉडकास्टिंग' कंपनी नामक कंपनी ने तत्कालीन सरकार से करार करके मुंबई में 23 जुलाई 1927 और कोलकाता में 26 अगस्त 1927 को आकाशवाणी के दो केंद्रों की स्थापना की। पूराकाम स्वतंत्रता काल में प्रसार माध्यम का विकास तेजी से होता गया। आकाशवाणी कार्यक्रम 167 से देश के 90 प्रतिषत लोगों तक पहुंचाए जाते हैं।देश विदेश के समाचार और विचार करना तो है ही साथ ही मनोरंजन और लोक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय गीत समूह गीत विशिष्ट वार्ता विशेषताएं स्वास्थ्य संबंधी जानकारी नाटक आदि का सीधा प्रसारण महिलाओं, बच्चों, सैनिकों, श्रमिकों, दृषकों आदि के लिए विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। आकाशवाणी से प्रसारित कार्यक्रमों से जनता के मनोरंजन के साथ उनका सामाजिक आर्थिक राजनीतिक प्रबोधन भी होता है। इस दृष्टि से आकाशवाणी यह बहुआयामी प्रसार माध्यम है।

भारत में अधिक संख्या निरक्षर लोगों की है। यह इसीलिए समाचार पत्रों से अधिक रेडियो से लाभ होता है कम समय में देश के दूरस्थ गांवों तक समाचारों को प्रसारित करने की यह व्यवस्था समाचार पत्रों की दुनिया से बहुत भिन्न है। देश की सीमा पर जहाँ समाचार पत्र नहीं पहुँच सकते वहाँ देश के रक्षक सैनिकों का मनोरंजन करने का कार्य आकाशवाणी करती है। 'आपकी फरमाइश' यह खास सैनिकों के लिए आयोजित कार्यक्रम है। छोटे–छोटे गावों में रेडियो की लोकप्रियता अधिक है। दृषितंत्र में आधुनिकीकरण इस विषय पर चर्चा की जाती है जो किसानों के लिए फायदेमंद है।

रेडियो की उपयोगिता इस दृष्टि से भी है कि उसे किसी भी जगह आसानी से ले जाया जा सकता है। आकाशवाणी पर हर रोज मौसम की जानकारी मिलती है। सहज सुलभ भाषा के कारण आकाशवाणी हर किसी को प्रिय लगती है दिन–ब–दिन आकाशवाणी का स्वरूप व्यापक से व्यापक होता जा रहा है। ज्ञान के नए द्वार खोले जा रहे हैं। श्राव्य होने के कारण निरक्षर लोग भी इससे लाभान्वित हो रहे हैं। आकाशवाणी से सामाजिक परिवर्तनों की संभावनाए बढ़ती जा रही है। आकाशवाणी की तुलना में दूरदर्शन अधिक प्रभावी प्रसार माध्यम है। दूरदर्शन दृश्य श्रव्य माध्यम है अर्थात कार्यक्रम देखने और सुनने की सुविधा इसमें होती है। सन् 15 सितंबर 1959 को फिलिप्स (इंडिया) और यूनेस्को की सहायता से दिल्ली में प्रायोगिक स्वरूप में दूरदर्शन केंद्र की स्थापना की गई। अक्टूबर 1972 में मुंबई दूरदर्शन केंद्र का काम शुरू हुआ। सन 1989 साल के अंतिम दिनों में 482 दूरदर्शन केंद्र कार्यरत हुए। आज 21 वीं सदी के प्रथम चरण में घर–घर में दूरदर्शन है।

दूरदर्शन ज्ञान प्रसार, जानकारी का प्रभावी प्रसार माध्यम है। इसने संपूर्ण विश्व को छोटा बना दिया है। कोई प्रसंग घटित होते समय प्रत्यक्ष देखने और सुनने की सुविधा होने के कारण प्रेक्षकोंपर उसका अत्यंत गहरा और प्रभावी परिणाम होता है। क्रिकेट में सचिन की बॅटिंग का वर्णन सुनने की अपेक्षा देखने का अधिक मजा आता है। साक्षर और निरीक्षक दोनों को इसका लाभ होता है। बच्चे, बड़े सभी के लिए दूरदर्शन कार्यक्रम होते है। धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों का दूरदर्शन पर दिखाया जाता है। जिसका लाभ घर बैठे सभी लोग अपनी–अपनी रुचि के अनुसार लेते हैं। बढ़ती हुई आबादी, दहेज की समस्या, अंधश्रद्धा, व्यसनमुक्ति इन विषयों पर कार्यक्रम दिखाए जाते हैं, जिसका लाभ सभी लोगों को होता है। सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से इस प्रकार के कार्यक्रमों में निश्चित परिणाम होता है। इसी तरह आम जनता तक प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति जैसे राजनैतिक व्यक्तियोंका निवेदन सहजता से पहुंचता है। डिस्कव्हरी, नेशनल जियोग्राफी जैसे चौनल द्वारा प्रदृति के अद्भुत चमत्कारों को बड़ी खूबी से दिखाया जाता है। जैसे–ज्वालामुखी का उद्रेक हिमवृष्टी, भूकंप, विनाशकारी बाढ़ आदि। साथ ही विविध प्राणी वनस्पति उनके उपयोग के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त होती है। खाना खजाना तो महिलाओं का अत्यंतप्रिय कार्यक्रम है, क्योंकि भोजन अधिक स्वादिष्ट बनाने की टीप तरला बेन देती है। रामायण, महाभारत जैसी धार्मिक धारावाहिक विरोधियों का मन बहलाती है तो मिकी माऊस जैसे कार्टून बच्चों का मनोरंजन करते हैं। बच्चों का सामान्य ज्ञान और आत्मविश्वास बढ़ाने 'अत्कास्कॉलर्स' जैसे कार्यक्रम दूरदर्शन पर आयोजित किए हैं। दूरदर्शन पर हर एक घंटे में समाचार होते हैं। चुनावी दौर में इसका अधिक उपयोग होता है।

भारत में अनेक भाषाएं बोली जाती है। इसे ध्यान में रखते हुए हर भाषा की स्थापना की है। जैसे कि झी मराठी, झी गुजराती, झी कन्नड़ आदि। दूरदर्शन हर एक की पसंद हैं। छोटे बच्चों से लेकर बड़ों तक अमीरों से लेकर गरीबों तक हर घर में और घर के हर सदस्य की

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

पसंद है। दूरदर्शन से अधिक उपयुक्त साधन है संगणक। आज का युग संगणक का युग है। संचार के हर क्षेत्र में इस्तेमाल किया जा रहा है। संगणक का अर्थ कुशाग्र बुद्धि का कहा जा सकता है। दो हजार वर्ष संगणक का मुल रूप 'अबॅकस' इस संख्यामापन यंत्र में मिलता है। विश्व का सबसे पहला संगणक गणिततज्ञ पास्त ने 1682 में किया। सन 1945 में पहला इलेक्ट्रॉनिक संगणक पेनसिल्व्हनिया विश्वविद्यालय के प्रो. एकर्ट और प्रो. मॉचले इन दोनों ने निर्माण किया। साथ ही भारत में संगणक का आगमन सन 1955 में हुआ। संगणक की विशेषता यह है कि कभी गलत नहीं होता। इसलिए बैंकिंग अकाउंट हिसाब शेयर बाजार आदि क्षेत्र में अधिक उपयुक्त है।

समाचारपत्र, संचार, व्यवस्था, रेलवे, हवाई जहाज के आरक्षण, होटल, इंजीनियरिंग, शिक्षा क्षेत्र, मनोरंजन, बिजली का बिल, वेतन पत्रक, बीमा कंपनी, वैद्यकिय क्षेत्र इन सभी क्षेत्रों में उपयोग किया जाता है। तेजी से कार्य करने की क्षमता होती है इलेक्ट्रॉनिक। हम देखते है की कम से कम समय में तेजी से कार्य करने की क्षमता संगणक में है। एक व्यक्ति की कार्य करने की जितनी क्षमता होती है, उससे दस गुना अधिक क्षमता संगणक की होती है। इसका अर्थ है दस लोगों का समय बच जाना है। अलावा इसके एक व्यक्ति एक ही क्षेत्र में निपुण होता है लेकिन संगणक हर क्षेत्र में परिपूर्ण है। उसकी एकाग्रता अटूट है। उसे भरोसेमंद साथी कहना गलत नहीं है। आज के युग में हर क्षण घड़ी के कांटों की तरह जीवन गतिमान हो रहा है। इस स्थिती में सामाजिक, आर्थिक विकास में संगणक का बहुत बड़ा योगदान है। संगणक का महत्व पूर्ण भाग इंटरनेट है। इंटरनेट से पुरा विश्व को समीप आया है। भारत में बैठकर किसी भी देश के कार्याक्रमों को देख सकते है।

जनसंपर्क का सबसे अधिक प्रभावी प्रसार माध्यम इंटरनेट है। आज युवा पीढ़ी चौटिंग की वजह से इसकी और अधिक आकर्षित हो रही है। अलग–अलग वेबसाइट द्वारा किसी क्षेत्र, व्यक्ति, देश, या स्थल की हम आसानी से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। संगणक ने सभी माध्यमों काअर्थशून्य कर दिया है। भारत की ही नहीं हम किसी भी देश की खबरें तथा समाचार पत्र को पढ सकते है। अलग–अलग उपकरणों (किट्स) जोड़कर रेडियो के मध्यम से गीत भी सुन और देख सकते हैं। साथ ही फिल्म भी देख सकते हैं और ई–मेल द्वारा लिखित संदेश किसी को भी भेज सकते है। इस तरह सभी गुणों की प्राप्ति संगणक में होती है। इलेक्ट्रॉनिक प्रसार माध्यमों ने जनसंपर्क का कार्य सुलभ कर दिया है। आज का युग प्रसार माध्यमों का युग कहलाया जाता है। प्रसार माध्यमों से लोगों का मनोरंजन, विश्वभर की जानकारी, सामाजिक परिवर्तन, लोकशिक्षण आदि अनेक उद्देश्य साध्य हुए हैं। इस क्षेत्र में सबसे अधिक योगदान उपग्रहों का है। जिन्होंने पूरे विश्व को एकत्रित किया है। घर बैठे छोटे से पर्दों पर दुनिया का इतना ही नहीं मंगल जैसे ग्रह की जानकारी और छायाचित्र देख सकते हैं। प्रसार माध्यमों का प्रमुख विशेषतायें यह है कि हर उम्र के व्यक्ति तक पहुंचाने की क्षमता इन माध्यमों में है इस प्रकार सारे संसार को एक गांव जैसे बनाने वाले प्रसार माध्यमों की उपयोगिता निसंदेह है।

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि संचार एवं प्रसार मध्यामों के कारण लोगों के जीवन शैली में परिवर्तन आया है। विद्वानों, विश्लेषकों का मानना है कि उपभोक्तावाद के विकास और फैलाव में जनसंचार माध्यमों की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। फैशन से लेकर खानपान तक में लोगों की आदतों को बदलने में जनसंचार माध्यमों का योगदान महत्वपूर्ण है। आधुनिक उपभोक्तावाद जीवन शैली का गहरा असर बच्चों, युवाओं पर प्रभाव पड़ रहा है। जनसंचार माध्यमों में जहां एक और लोगों को सचेत और जागरूक बनाने में अहम भूमिका निभाई है। जनसंचार माध यमों के बिना आज सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। ऐसे में यह जरूरी है कि हम जनसंचार माध्यमों से प्रसारित और प्रकाशित सामग्री को निष्क्रिय तरीके से ग्रहण करने के बजाय उसे सक्रिय तरीके से सोच–विचार करके और आलोचनात्मक विश्लेषण के बाद ही स्वीकार करें। एक जागरूक पाठक और श्रोता को अपनी आंखें कान और दिमाग हमेशा खुले रखनी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 जनसंचार माध्यम चुनौतियां और दायित्व, डॉ. त्रिभुवन रॉय
2 प्रयोजनमूलक हिंदी रू अधुनातन आयाम डॉ. अंबादास देशमुख
3 संचार और विकास, श्याम चरण दुबे
4 विज्ञापन, जनसंचार माध्यम और सामाजिक परिवर्तन, डॉ. अनिल पुरोहित
5 जनसंचार एवं पत्रकारिता, एम.पी. चतुर्वेदी
6 भारत में संचार माध्यम, डॉ. संजीव भानावत
7 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया लेखन, प्रो. रमेश जैन
8 प्रयोजन्मूलक हिंदी की नई भूमिका, कैलाशनाथ पांडे
9 प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप, राजेंद्र मिश्र राकेश शर्मा
10 जनसंचार एवं पत्रकारिता विनय कुमार
11 हिंदी के अद्यतन अनुप्रयोग डॉक्टर माधव सोनटक्के

*****